ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
बसन्त पंचमी की शुभकामनाएं एवं
बालवीर हकीकत राय
बलिदान दिवस पर शत-शत नमन

वर्ष 48, अंक 14 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 जनवरी, 2025 से रविवार 02 फरवरी, 2025
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

चलो मुम्बई! चलो मुम्बई!! चलो मुम्बई!!!

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति के सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा

आर्यसमाज का 150वाँ स्थापना दिवस समारोह

29-30 मार्च, 2025 (शनि-रविवार) : सिडको कन्वैंशन सैन्टर, वाशी, नई मुम्बई

विशेष अनुरोध

★ समस्त भारत की आर्यसमाजें एवं आर्य संगठन अपने साप्ताहिक सत्संगों में 150वें स्थापना दिवस समारोह की सूचना अवश्य दें और अधिकाधिक संख्या में सपरिवार पहुंचने के लिए प्रोत्साहित करें।

★ उपरोक्त तिथियों में अपना बड़ा एवं विशेष कार्यक्रम न रखें।

★ इस ऐतिहासिक समारोह में समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य संगठनों के अधिकारी, संन्यासी, विद्वान एवं सदस्य तथा कार्यकर्ता अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

★ पंजीकरण अनिवार्य है - www.aryasamajmumbai150years.com/ पर सभी पंजीकरण अवश्य कराएं।

★ आपकी आर्यसमाज/संस्था की ओर से जो महानुभाव समारोह में सम्मिलित होना चाहते हैं, कृपया उनके नाम, पते एवं मोबाइल नं. की सूची प्रान्तीय सभा के माध्यम से प्रेषित करें, ताकि तद्नुसार व्यवस्थाएं की जा सकें।

★ इच्छुक महानुभाव 28 मार्च को मुम्बई पहुंचने के हिसाब से टिकटें करवाएं - रेलवे आरक्षण 27 जनवरी से प्रारम्भ हैं।

★ समारोह में पधारने वाले समस्त आर्यजनों के लिए आर्यसमाजों, संस्थाओं, साधारण होटल, 2-3-4 स्टार होटलों में सशुल्क व्यवस्था की गई है।

★ मुम्बई भ्रमण एवं आवास व्यवस्था के लिए सिल्वर, गोल्ड एवं प्लैटिनम पैकेज बनाए गए हैं।

★ आप स्वयं अपनी सुविधा/आवश्यकता अनुसार सम्मेलन स्थल के निकट उपलब्ध होटल बुक कर सकते हैं। सूची वैबसाइट पर उपलब्ध है।

★ मुम्बई में समारोह, आवास, भोजन व्यवस्था अथवा भ्रमण पैकेज सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु 8422891578/9152137937 से सम्पर्क करें help@aryasamajmumbai150years पर ईमेल करें या लॉगइन करें www.aryasamajmumbai150years.com

निवेदक :- ★ ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति ★ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ★ आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

200वीं जयन्ती एवं 150वां स्थापना वर्ष : महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का अवसर

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, भारत मंडपम - प्रगति मैदान : 1 फरवरी से 9 फरवरी, 2025

विश्व पुस्तक मेले में आर्यसमाज के स्टाल पर अधिकाधिक संख्या में अवश्य पधारें आर्यजन

आओ! अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश प्रचार यज्ञ में एक आहुति प्रदान कर हम भी बनें सहयोगी

स्टाल उद्घाटन	आप द्वारा प्रदान की गई एक आहुति भी ला सकती है किसी के जीवन में परिवर्तन	मेला समापन
1 फरवरी, 2025 प्रात: 11:30 बजे	हॉल नं. 2-3 स्टाल नं. N 05	9 फरवरी, 2025 रात्रि 8 बजे

आपके 30/- रु० के योगदान के साथ 'मात्र 20/- रुपये में' दिया जाएगा 'सत्यार्थ प्रकाश'

सत्यार्थ प्रकाश केवल 20/- रुपये में जन साधारण को उपलब्ध करवाने के लिए अपनी ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान करें

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कृत अमूल्य ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' आप द्वारा प्रदान की गई सब्सिडी (छूट) के साथ जनसाधारण को मात्र 20 रुपये में उपलब्ध कराया जाएगा। अत: सभी पाठकों, आर्यजनों, दानी महानुभावों, आर्यसमाजों/सभाओं एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि सत्यार्थ प्रकाश की अधिकाधिक प्रतियां 20/- में उपलब्ध कराने हेत 30/- रुपये प्रति की दर से सब्सिडी (छूट) सहयोग प्रदान करें। आप अपना सहयोग 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर द्वारा भेजकर अथवा निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा करके अथवा दिया गया क्यू.आर. कोड स्कैन करके भी दे सकते हैं -

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 1098101000777 केनरा बैंक, IFSC - CNRB0001098 MICR - 110015025

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी जी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप व्हाट्सएप्प करें या aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद प्राप्त कर लेवें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

देववाणी-संस्कृत

आत्म-ज्योति को प्रकाशित कर दो

वेद-स्वाध्याय

गूहता गुह्यं तमो वि यात विश्वमत्रिणम्। ज्योतिष्कर्त्ता यदुश्मसि।।
-ऋ 1/86/10
ऋषिः- राहूगणो गोतमः।। देवता-मरुतः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ- मरुतः = हे प्राणो! **गुह्यं तमः** = गुहा के अँधेरे को **गूहत** = विलीन कर दो **विश्वं** अत्रिणम् = सब खा जानेवालों को **वि यात** = भगा दो। **यत् उश्मसि** = जिसे हम चाह रहे हैं। उस ज्योतिः = ज्योति को **कर्त्त** = हमारे लिए कर दो।

विनय- हे मरुत देवो! हे प्राणो! हम अँधेरी गुफा में पड़े हैं। चारों ओर अंधेरे-ही अंधेरे में खा जानेवाले राक्षस हमें सता रहें हैं, इस अँधेरे में खा जाने वाले राक्षस हमें सता रहे हैं, हमें खाये जा रहे हैं; उन्हें भगाओं। इन सब 'अत्रियो' को हमसे दूर कर दो, हमें जो कुछ चाहिए वह प्रकाश है। हमें प्रकाश दो, इस गुफा में चारों ओर प्रकाश फैला दो।

मैं पञ्चकोशों की अँधेरी गुफा में रह रहा हूँ-शरीर, प्राण मन आदि के पाँच शरीरो में बन्द पड़ा हुआ हूँ- अपने-आपको भूलके इन शरीरों को आत्मा समझ रहा हूँ। इसलिए काम, क्रोध, लोभ आदि राक्षस मुझे खाये जा रहे हैं। ये काम, क्रोध आदि अज्ञान में ही रह सकते हैं। आत्मान्धकार में ही ये फूलते-फलते हैं। इसलिए हे प्राणो! तुम मेरे गुहा के अन्धकार को विलीन कर दो। अन्धकार के हटने पर ये 'अत्रि' अपने-आप ही यहाँ से भाग जाएँगे। जब हमसें आत्म-ज्योति फैल जाएगी, सब भूतों, सब प्राणियों में फिर आत्मा दिखाई देने लगेगा तो हम किसके प्रति क्रोध करेंगे? जब हमारा प्रेम सर्वव्यापक हो जाएगा तो हम किस एक में कमासक्त होंगे? लोभ किसलिए करेंगे? ओह, आत्म ज्योति का प्रकाश हो जाने पर ये क्षुद्र 'अत्रि' कहाँ ठहर सकते हैं। आत्म-ज्योति वह ज्योति है जिससे सहस्रों सूर्य, चन्द और विद्युत् प्रकाशित हो रही हैं, जिस परमोज्ज्वल ज्योति के सामने हजारों सूर्यो की इकट्टी ज्योति भी फीकी है-वह प्रकाश हमें दो। हम उस प्रकाश के पान के लिए तडप रहे हैं। उस प्रकाश के पा जाने पर तो सब-कुछ हो जाएगा, हृदय का अन्धकार मिट जाएगा और इन खा जानेवालों से हमारी रक्षा हो जाएगी। हे प्राणो! तुम प्रकाश के लानेवाले हो। हम जागने पर प्रकाशावरण का क्षय हो जाता है। 1 इस सत्य में हमें विश्वास है। इसलिए हे प्राणो! हम तुमसे विनय कर रहे हैं तुम हममें समाकर हमारे प्रकाश का द्वारा खोल दो।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

महामंडलेश्वर के रूप में अभिनेत्री ममता कुलकर्णी

क्या पवित्रता और उद्देश्यों से भटक रहा है कुम्भ?

कुम्भ को एक अवसर कहा जाता था, लेकिन समय बीतने के साथ इसने एक महोत्सव का आकार ले लिया है। यह एक ऐसा धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व है, जो पूरी दुनिया पर एक छाप छोड़ देता था, इस तरह का पर्व जो एक धर्म और संस्कृति के बारे में सोचता था। किन्तु इस बार कुम्भ देखकर मन में सवाल उफन रहे हैं कि क्या पवित्रता और उद्देश्य से भटक रहा है कुम्भ मेला? अगर कुम्भ को सार्थक ही करना था तो इसमें वेटिकन से लेकर तमाम मत-पंथ के विद्वानों को आमंत्रित करते, उनसे शास्त्रार्थ करते। मीडिया सोशल मीडिया का युग है, सनातन धर्म और ज्ञान की रोशनी दुनिया तक पहुँचती। ईश्वर, ज्ञान, मोक्ष, समाधि जैसे प्रश्न उठते तो दुनिया को उनके जवाब वेदों, उपनिषदों, दर्शनों के अतिरिक्त कहीं नहीं मिलते। दुनिया के जिज्ञासु लोगों का आना तब सार्थक होता, दुनिया का सबसे बड़ा मेला फलीभूत होता। वैसे पौराणिक कहते हैं इस स्थान पर कभी अमृत छलका था, किन्तु कुम्भ में बहुत कुछ देखकर लग रहा है कि जैसे इस बार कई तरह से विष भी छलक रहा है।

प्रयाग महाकुम्भ, जिसके आरम्भ होने से पहले अनेकों विवाद सामने आए, जिसमें एक विवाद था कि सनातन धर्म प्रहरी संस्था आर्य समाज कुम्भ मेले में न आए। इसके बाद महाकुम्भ का आरम्भ हुआ, तब से लेकर अब तक कई चीजें सामने आईं। कई दिन तक सुन्दर साध्वी का चर्चा में रहना, फिर नशे में लिप्त एक युवा, जो कि आई.आई.टी. मुम्बई से डिग्री लेकर कुम्भ में अपने बयानों को लेकर चर्चा में रहा। इसके साथ माला बेचने वाली एक गरीब की बेटी को सुन्दर आँखों वाली लड़की बताकर मीडिया ने कई दिन गुजारे। अब अभिनेत्री ममता कुलकर्णी को किन्नर अखाड़े की महामंडलेश्वर बनाया गया है। हालाँकि इससे कई संत नाराज हैं। शांभवी पीठ के पीठाधीश्वर स्वामी आनंद स्वरूप महाराज ने कहा- किन्नर अखाड़े को मान्यता देकर पिछले कुंभ में महापाप हुआ था। कुंभ का मजाक बनाने का प्रयास हो रहा है।

असल में इस बार कुम्भ उसकी पवित्रता और उद्देश्य के अलावा सब कुछ दिखाई दे रहा है। देश के हर कोने के साधु-संत, नागा बाबा हैं तो किन्नर भी। महिला नागा आए हैं तो विश्व स्तरीय सुंदर साध्वी भी हैं। सबसे अधिक कौतूहल वाला क्षेत्र अखाड़े हैं। 13 अखाड़ों में लाखों नागा बाबा, साधु अजब-गजब काम कर आकर्षण बटोर रहे हैं। कहीं चिमटा खनक रहा है। कोई बाबा आते-जाते यात्रियों पर कोड़े बरसा रहा है। कोई अश्लील शब्दों से संत की मर्यादा भंग कर रहा है। कोई बाबा महिलाओं के कपड़े बदलने के स्थान पर छिपकर बैठा है, जिसे लेकर बवाल मच रहा है। तो धधकती धूनियों के जितना ही चिलम का धुआं भी वातावरण में एक अजीब सी गंध से सबको अपनी ओर खींच रहा है। करतब से लबालब क्षेत्र में विदेशी भी खूब घूम रहे हैं।

संगम स्नान के बाद आसपास के किसी भी पल्टून (पीपा पुल) को पार करते ही अजब-गजब करतब वाले साधुओं के क्षेत्र में अचरजों की चित्रावली देखकर आप वे पल सहेज लेंगे, जो शायद ही जिन्दगी में कहीं किसी स्थान पर एक साथ मिलें। अखाड़ों की इस दुनिया में बाबा 14 साल से एक हाथ ऊपर किए बैठे हैं।

रायबरेली के हरिश्चंद्र विश्वकर्मा अब चाबी वाले बाबा हैं। इसी चाबी से वे सबकी किस्मत का ताला खोल रहे हैं। वे 20 किलो वजन की चाबी हर समय अपने साथ लेकर चल रहे हैं। महाकुंभ की अखाड़े वाली सड़क पर उनके मोहपाश में हर कोई बंधा है। श्रद्धालु उनकी चाबी का रहस्य जानना चाहते हैं तो वे इसे जादुई बता कुछ कहने के बजाय इससे आध्यात्मिक ज्ञान की कुंडी खोलने की बात कहते हैं। संन्यासी गीतानंद जूना अखाड़े से जुड़े हैं। सिर पर सवा लाख रुद्राक्ष धारण कर रखे हैं। ये कौतूहल का विषय बने हुए हैं।

मध्य प्रदेश के इंदौर से आए महंत राजगिरि को एंबेसडर बाबा या टार्जन बाबा के नाम से पहचान मिली है। उनकी भगवा रंग की कार ही उनका आश्रम है। वे नासिक, उज्जैन, प्रयागराज में कुंभ में जा चुके हैं।

श्री पंचदशनाम जूना अखाड़े में 14 साल से खड़ेश्वरी बाबा हैं। वे एक पैर पर खड़े होकर लोगों को क्या दिखाना चाह रहे हैं ये तो वही जानें, किन्तु शरीर को इस तरह कष्ट देना यह कैसी साधना है? असम के छोटा दादू बाबा तीन फीट आठ इंच के हैं। जूना अखाड़े से जुड़े बाबा ने 32 वर्षों से स्नान ही नहीं किया। इन्हें गंगापुरी बाबा के नाम से भी जाना जाता है। पेयहारी बाबा 40 साल से चाय पर जिन्दा हैं। 41 साल से मौन हैं। मूलरूप से महोबा के रहने वाले बाबा अन्न नहीं ग्रहण करते हैं। ऐसे ही कई नागा बाबा सड़क के बीच खड़े होकर मोरपंख से भक्तों को आशीर्वाद बांट रहे हैं। इनके पास थैली में लोग दक्षिणा देने में संकोच नहीं कर रहे हैं।

सड़क के किनारे-किनारे तंबुओं की श्रृंखला में और भी करतब वाले बाबा बैठे हैं। कोई माथे से तो कोई जटाओं से आग निकाल रहा है। किसी के चेहरे पर लगी भस्म उसकी अलग ही उपस्थिति का अहसास करा रही है। कोई काली के रूप में है, कोई जटाओं से गंगा निकाल रहा है। कोई किलकारी से तंद्रा भंग कर रहा है तो कई विदेशी श्रद्धालुओं को अपना भक्त बना रहे हैं। ऐसे में सवाल बन रहे हैं कि आखिर कुम्भ का आयोजन क्यों और किसलिए किया जा रहा है। कथित भक्ति, अखाड़ों की शक्ति, गंगा स्नान का शोर तो गूंज रहा है लेकिन कहीं भी ज्ञान का स्नान देखने को नहीं मिल रहा है। भक्तों पर थप्पड़-चिमटे बरसाते संन्यासी तो दिख जाएंगे लेकिन ज्ञान की बरसात आपको कुम्भ में विरले ही देखने को मिलेगी।

इसके अलावा महामंडलेश्वर के पद ऐसे बांटे जा रहे हैं जैसे भंडारे में प्रसाद। एक फिल्म अभिनेत्री ममता कुलकर्णी को भी महामंडलेश्वर घोषित किया गया है। दरअसल, एक समय साधु-संतों की मंडलियां चलाने वालों को मंडलीश्वर कहा जाता था। धर्म का प्रचार करने की जिसके पास जितनी बड़ी मंडली, वह उतना ही बड़ा मंडलीश्वर कहा जाता था। इसके बाद जब वह धर्म प्रचार करते हुए शिक्षा, ज्ञान और संस्कार के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचता, तो उसे महामंडलेश्वर की उपाधि मिलती थी।

- शेष पृष्ठ 7 पर

ज्ञान प्रबोध

महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं पर आधारित वैदिक प्रश्नोत्तरी

प्र.1 शिक्षा किसे कहते हैं?

उ. जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको 'शिक्षा' कहते हैं।

प्र.2 विद्या किसे कहते हैं?

उ. प्रकृति से लेकर परमात्मा तक सब विषयोंको जानकर उनसे लाभ लेना 'विद्या' कहलाती है।

प्र.3 नैतिक शिक्षा किसे कहते हैं?

उ. जिसमें मानवता सिखाई जाए, जैसे- ईमानदारी, राष्ट्रभक्ति, न्याय, दया, ब्रह्मचर्य आदि, इसे 'नैतिक शिक्षा' कहते हैं।

प्र.4 अविद्या किसे कहते हैं?

उ. विपरीतज्ञान को 'अविद्या' कहते हैं, जैसे- सुखदायी विद्या प्राप्ति में कष्ट व दुखदायी व्यसनों में सुख समझना आदि।

प्र.5 सभ्यता किसे कहते हैं?

उ. जिस व्यवहार को सत्पुरुष श्रेष्ठ मानते हैं, वह 'सभ्यता' है, जैसे- सच बोलना, मधुर बोलना, सेवा करना आदि।

प्र.6 धर्मात्मता किसे कहते हैं?

उ. आत्मा को न्याय-दयादि गुणों से युक्त करना 'धर्मात्मता' है।

प्र.7 जितेन्द्रियता किसे कहते हैं?

उ. सुख-दु:ख, निंदा-स्तुति लाभ-हानि में समता 'जितेन्द्रियता' है।

प्र.8 मनुष्य ज्ञानवान कब होता है?

उ. जब तीन उत्तम शिक्षक हों।

प्र.9 तीन उत्तम शिक्षक कौन हैं?

उ. 1. माता 2. पिता 3. आचार्य = शिक्षक।

प्र.10 गुरु किसे कहते हैं?

उ. माता-पिता व ज्ञानदाता को ही 'गुरु' कहते हैं।

प्र.11 माता ही सर्वोत्तम गुरु क्यों है?

उ. संतानहित की भावना व प्रेम सर्वाधिक होने से।

प्र.12 क्या भूत-प्रेतों से डरना ठीक है?

उ. नहीं, भूत-प्रेत नामक कोई चेतन प्राणी नहीं होता।

प्र.13 झाड-फूंक से रोग ठीक होते हैं?

उ. नहीं, ये विज्ञान विरुद्ध, अंधविश्वास व छल-कपट है।

प्र.14 छल-कपट किसे कहते हैं?

उ. दूसरों को धोखा देकर स्वार्थ सिद्ध करना 'छल-कपट' है।

प्र.15 क्या जन्मकुंडली सच होती है?

उ. नहीं, जन्मकुंडली में लिखी बातें झूठी होती हैं।

प्र.16 क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है?

उ. नहीं, गणित ज्योतिष पूर्णसत्य, फलित ज्योतिष झूठ है।

प्र.17 क्या राहु, केतु, शनि दुख देते हैं?

उ. नहीं, ये एक ही सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम हैं।

प्र.18 राहु किसे कहते हैं?

उ. दुष्टों से छुड़ाने वाले ईश्वर को ही 'राहु' कहते हैं।

प्र.19 केतु किसे कहते हैं?

उ. सबके आधार व दु:खनाशक ईश्वर को 'केतु' कहते हैं।

प्र.20 जन्मकुंडली झूठी होती है, इसे सिद्ध कीजिए?

उ. उदाहरण जैसे- एक ही समय में जन्में अनेक बच्चों का ज्ञान, बल, सुख-दु:ख व भोग एकसा नहीं होता।

प्र.21 क्या गंडे, ताबीज, लॉकेट पहनने, पशुओं की बलि चढ़ाने से दु:ख-दरिद्रता मिटती है?

उ. नहीं, अपितु इससे लोग और अधिक वहमी, कायर, हिंसक, दरिद्र व अंध- विश्वासी बन जाते हैं।

परिवर्तन : (आता नहीं है - लाया जाता है।) सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारतवर्ष का वैभव काल

गतांक से आगे -

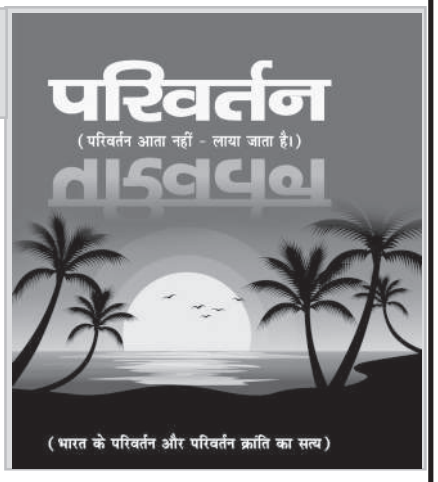

राज्य व्यवस्था में ब्राह्मण वर्ण के ही राजगुरु होते थे। प्रत्येक विषय पर वेद की व्यवस्था को बताना उन्हीं का कार्य था। राजा भी राजगुरु द्वारा दी गई व्यवस्था का ही पालन करते थे। शिक्षा सबके लिए राज्य की ओर से नि:शुल्क और अनिवार्य थी। राजा का बालक और राजगुरु का बालक, व्यापारी (वैश्य) का बालक और सेवक का बालक एक ही वातवरण में एक ही जैसे वस्त्रों में, एक ही गुरुकुल में और एक ही आचार्य गुरु से, एक जैसी शिक्षा प्राप्त करते थे। सोचें, भविष्य की एकता की नींव गुरुकुल में ही पड़ जाती थी। शिक्षा पूरी होने पर शिष्यों की परीक्षा लेने के पश्चात् गुरुकुल के आचार्य द्वारा उन शिष्यों को उनकी योग्यता के अनुसार 'वर्ण' (डिग्री) प्रदान की जाती थी। अर्थात् यदि किसी भी कुल में जन्में बालक का परीक्षा में उत्तम फल आया है और वह सब शास्त्रों में पूर्ण निष्णात है, पढ़ाने की योग्यता रखता है और उसका व्यवहार और आचरण भी उच्च कोटि का रहा है तो उस युवा छात्र को ब्राह्मण वर्ण आबंटित कर दिया जाता था। जिनकी अधिक रूचि एवं योग्यता ग्रन्थों में न होकर शस्त्र विद्याओं और बाहुबलि कार्यों में अधिक थी उनको क्षत्रिय वर्ण, जिनकी उपरोक्त दोनों कार्यों में रूचि न हो सके, योग्यता न हो सके और हिसाब करने, व्यापार करने, कृषि करने की योग्यता हो उनको वैश्य वर्ण और जो पूरे परिश्रम से पढ़ाने के पश्चात् भी उपरोक्त तीनों योग्यताओं को प्राप्त न कर सकें, वह उनका शूद्र वर्ण का ही कार्य दिया जाता था, पर यह कोई जाति नहीं थी। ये उपाधियों के रूप में था। शूद्र वर्ण के व्यक्ति को भी अवसर पुन: दिया जाता था कि वह पुन: पढ़े और परीक्षा दे, उत्तीर्ण हो तो उसको उसकी योग्यतानुसार वर्ण दे दिया जाता था।

यहां पाठक इस बात को समझेंगे कि योग्यता ही वर्ण पाने का पैमाना थी, जन्म किस के घर हुआ है, उसका को आधार था ही नहीं। शास्त्रों का इस बात पर बल था-**जन्मना जायते शूद्र:**-' जन्म से तो सभी शूद्र ही होते हैं।'

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि शूद्र वर्ण आबंटित नहीं होता था, वस्तुत: जो प्रयत्न करने पर भी पढ़ नहीं पाता था, वह शूद्र ही रह जाता था। केवल ज्ञान अर्जन करके ही अन्य वर्णों को प्राप्त किया जा सकता था।

और अधिक समझने के लिए कहें तो'अगर राजा का बेटा भी शास्त्रों को पढ़ने-पढ़ाने की, शस्त्रों की और व्यापार करने के गुणों की योग्यता नहीं पा सका तो वह भी शूद्र वर्ण में ही रह जाया करता था और अगर शूद्र कुल में जन्म लेने वाला बालक भी पूर्ण योग्यता प्राप्त करने में सफल हो जाता था तो वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, या वैश्य वर्ण प्राप्त करने का, राज्य व्यवस्था अनुसार पूर्ण अधिकारी हो जाता था।' ये ही थी आदर्श वर्ण व्यवस्था और ये ही है आदर्श व्यवस्था।

इस व्यवस्था का सामान्य सा अर्थ पाठक समझ सकते हैं कि सामाजिक व्यवस्था में कोई ऊंच-नीच और भेदभाव नहीं था। सबके बालकों को पढ़ने का एक समान वातावरण, एक समान भोजन प्राप्त था। वर्ण का निर्धारण जन्म के आधार पर न होकर उसके द्वारा अर्जित ज्ञान और योग्यता के आधार पर होता था। यही व्यवस्था हमारे समाज में करोड़ों वर्षों तक चलती रही और सबसे बड़ी बात कि ये शिक्षा व्यवस्था राज्य की ओर से सब बालक-बालिकाओं के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य होती थी।

आपने कभी यह विचार किया कि भारत को आखिर विश्वगुरु कहा क्यों जाता था? और सोने की चिड़िया क्यों था इसका नाम? इस लेख में आप इसको अवश्य गहरा से समझेंगे।

आर्यावर्त के उस समय के ज्ञान और विज्ञान की बात करें तो हमें 'सूर्य विद्या' का ज्ञान था जिसे "सूर्य सिद्धान्त" भी कहा जाता था, महावीर हनुमान इसके विशेषज्ञ ज्ञाता थे। हनुमान जी द्वारा सूर्य को मुख में रख लेने का अर्थ सूर्य विज्ञान का ज्ञाता होना ही है। सूर्य, पृथ्वी और अन्य ग्रहों के आपसी सम्बन्ध तथा गति हमें ज्ञात थे। तारों और नक्षत्रों परिवर्तन (परिवर्तन आता नहीं-लाया जाता है) के नाम हमने ही रखे थे, चन्द्रमा तथा अन्य ग्रहों पर हमारे पूर्वजों का जाना-आना था। उनके आवागमन के साधन अत्यधिक उन्नत थे। बिना प्रदूषण वाले अत्यधिक तेज गति से उड़ने वाले और पृथ्वी, पानी और वायु में चलने की समान क्षमता वाले वाहनों (यानों) का उल्लेख हमारे ऐतिहासिक ग्रन्थों में प्राप्त होता है। **- क्रमश:**

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

हर्षोल्लास से दिल्ली की जय-जय कालोनियों में मनाया गया राष्ट्रीय पर्व : 76वां गणतन्त्र दिवस

आर्य समाज हमेशा राष्ट्रीय पर्वों को प्रमुखता से मनाने वाला आंदोलन कारी संगठन है। 26 जनवरी 2025 को भारत राष्ट्र के 76वें गणतंत्र दिवस पर पूरे देश में राष्ट्रभक्ति की लहर चल रही थी, चारों तरफ उमंग, उत्साह और उल्लास का वातावरण था, भारत की राजधानी दिल्ली में भारत के माननीय यशस्वी प्रधानमंत्री और गणमान्यों ने अमर शहीदों को नमन किया, अमर जवान ज्योति पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए और 2 मिनट का मौन रखा गया, देश की आन, बान और शान जल, थल और नभ सेनाओं ने कर्तव्य पथ पर परेड मार्च किया और आश्चर्य चकित करने वाले करतब दिखाए, महामहिम राष्ट्रपति जी को सलामी दी। विभिन्न राज्यों की सुन्दर, मनोहारी, प्रेरक झांकियों की प्रदर्शनी से भारत का गौरव वृद्धि को प्राप्त हो रहा था।

इसी राष्ट्रीय भावना और कामना को साकार करते हुए आर्य समाज द्वारा दिल्ली की विभिन्न जय-जय कॉलोनियो में जहां अभावग्रस्त लोग राष्ट्रीय पर्वों को मनाने में असमर्थ रहते हैं, वहां यज्ञ, सत्संग और तिरंगे ध्वज को शान से फहराया गया, इस अवसर पर देशभक्ति के गीत, संगीत और प्रेरक भाषण भी दिए गए, अपने अमर शहीदों को स्मरण किया गया, जय-जय कालोनियों के हर आयु वर्ग के स्त्री पुरुष और बच्चे लोग सम्मिलित हुए। सभी ने राष्ट्रभक्ति को सर्वोपरि माना, महर्षि दयानंद और आर्य समाज के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर और भविष्य में भी ऐसे आयोजन करने के लिए निवेदन किया। उपस्थित लोगों के मन में भारत के प्रति प्रेम भाव था, सभी लोग भारत माता की जय, वंदे मातरम और तिरंगा झंडा ऊंचा रहे के नारे लगा रहे थे। - ***संयोजक***

आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग एवं पतंजलि योग समिति के तत्वावधान में 221 कुंडिय यज्ञ सम्पन्न

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग एवं पतंजलि योग समिति कोटा के संयुक्त तत्वाधान 12 जनवरी 2025 को आर.के. पुरम स्थित, गालव पार्क में महर्षि दयानंद सरस्वती के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष पर 221 कुण्डीय यज्ञ विश्व कल्याण की भावना से औषधि युक्त सामग्री से आहुतियां देकर संपन्न हुआ। अत्यधिक सर्दी में यजमानों का उत्साह व श्रद्धा भाव देखते ही बन रहा था।

इस अवसर पर पतंजलि योग समिति के मुख्य संरक्षक ईश्वरलाल सैनी ने दीप प्रज्ज्वन एवं डी.ए.वी कोटा के तुलसीदास व साथियों ने भजन प्रस्तुत किये।

आर्य समाज के वैदिक विद्वान अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि यज्ञ धर्म का मुख्य आधार स्तंभ है। धर्म शिक्षक आचार्य शोभाराम ने कहा कि कोरोना काल में आर्य उप-प्रतिनिधि सभा कोटा के पूर्व प्रधान स्मृति शेष अर्जुन देव चडडा जी के नेतृत्व में विशाल स्तर पर घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ कार्यक्रम और यज्ञ रथ यात्राओं के आयोजन हुए। वर्तमान युग में हम सब तक यज्ञों को पहुंचाने का कार्य महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा किया गया। स्वामी जी ने यज्ञ विज्ञान को हम सबके समक्ष उपस्थित किया। उप सभा के संभागीय प्रधान अरविंद पांडे ने आगंतुक सभी महानुभावों का आभार किया।

कार्यक्रम में सभा के कोषाध्यक्ष राधावल्लभ राठौर, राकेश चड्डा, कैलाश बाहेती, भेरोलाल शर्मा, श्योराज वशिष्ट, युवा कार्यकर्ता किशन आर्य हरियाणा, एडवोकेट नरेंद्र कुशवाहा, वीरेश आर्य पतंजलि योग समिति के जिला प्रभारी, प्रदीप शर्मा, लक्ष्मण सिंह, श्रीमती सन्तोष सैनी, श्रीमती उर्मिला व्यास, सुशीला कुर्मी सहित बड़ी संख्या में स्त्री, पुरुष उपस्थित रहे। - ***मुकेश चड्डा, मीडिया प्रभारी***

आर्यसमाज हडसन लाइन में मंत्रोच्चारण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यज्ञ प्रशिक्षित महिलाएं निरंतर घर-घर जाकर यज्ञ करा रही हैं। गत 13 जनवरी 2025 को आर्य समाज हडसन लानइन में 9 दिवसीय मन्त्रोच्चारण प्रशिक्षण शिविर का विशेष आरंभ हुआ जिसमें गुरुकुल चोटीपुरा की विदुषी स्नातिका मीमांसा आर्या जी के कुशल निर्देशन में मन्त्रोंच्चारण का अभ्यास किया गया। इस मंत्र उच्चारण अभ्यास शिविर का 21 जनवरी को समापन हुआ। समापन समारोह में आचार्य सत्यकाम जी ने महिलाओं को यज्ञ व मंत्रों के शुद्ध उच्चारण की उपयोगिता को बहुत गहराई से समझाया।

इस शिविर में प्रशिक्षित महिलाअें को मंत्र पाठ में शुद्ध उच्चारण करने में अत्यंत लाभ प्राप्त हुआ और वें मंत्र पाठ करने में स्वयं को सक्षम अनुभव कर रहीं थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती पर जारी स्मृति डाक टिकट

आर्य संस्थाएं अधिक से अधिक खरीदकर करें प्रयोग

भारतीय डाक India Post

विशेष अनुरोध - सरकार द्वारा जारी किए जाने वाले स्मृति डाक टिकट सीमित संख्या में और एकमुश्त केवल बार ही प्रकाशित किए जाते हैं। अतः समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य संगठनों, विद्यालयों, गुरुकुलों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि अपने पास स्मृति रूप में डाक टिकट रखने तथा जन साधारण में प्रचार-प्रचार के लिए अधिकाधिक संख्या में खरीदकर प्रचार करें, अपने दैनिक पत्र-व्यवहार, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड डाक आदि में प्रत्येक स्थान पर उपयोग करें, जिससे कि हजारों-लाखों आखों और हाथों से होते हुए यह प्रचारित हो और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म वर्ष की स्मृति रूप में सुरक्षित रहे।

आप अपनी संस्था के लिए जितनी डाक टिकटें प्राप्त करना चाहते हैं, कृपया उसकी संख्या के अनुसार अपनी सहयोग राशि 5/- प्रति डाक टिकट की दर से निम्नांकित बैंक खाते में जमा करा दें या राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते भेजें।

DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA

A/c No. : 2009257009039 IFSC :CNRB0002009 Canara Bank New Delhi

नोट - यह डाक टिकट ऑनलाइन भी प्राप्त की जा सकती है। सम्पूर्ण भारत में होम डिलीवरी सुविधा के लिए कोड स्कैन करें लॉग-इन करें अथवा मोबाइल पर सम्पर्क करें

vedicprakashan.com
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का ऑनलाइन स्टोर
96501 83336

दिल्ली सभा का प्रकल्प : घर-घर यज्ञ- हर घर यज्ञ

योजना का हो रहा है दिल्ली में बड़ा विस्तार : यज्ञ प्रशिक्षित महिलाओं ने माडल टाउन क्षेत्र की जय-जय कालोनियों में किया हवन प्रचार

'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' की भावना और कामना को साकार करने के लिए संकल्पित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा घर घर यज्ञ, हर घर यज्ञ की योजना निरंतर विस्तार कर रही है। इस महत्वपूर्ण कल्याणकारी सेवा के प्रति लोगों की लोकप्रियता बढ रही है। इसके लिए सभा की एक युवा विद्वानों, कार्यकर्ताओं की पूरी टीम समर्पित भाव से निरन्तर इस सेवाकार्य में संलग्न है। जहां एक तरफ सभा के ये संवर्धक दिल्ली की कालोनियों में, शिक्षण संस्थानों में, घर परिवारों में यज्ञ करा रहे हैं वहीं उन जय-जय कालोनियों में वेदमन्त्रों का उच्चारण हो रहा है, हवन की सुगंध फैल रही है जहां बहुत से लोग जाने में भी परहेज करते हैं।

इससे भी आगे सभा द्वारा संचालित घर-घर यज्ञ, हर-घर यज्ञ के कल्याणकारी योजना के अर्न्तगत जय-जय कालोनियों की महिलाओं को विधिवत यज्ञ का प्रिक्षण प्रदान किया गया। परिणाम स्वरूप अब ये याज्ञिक महिलाएं घर-घर जाकर यज्ञ की ज्योति को प्रज्वलित कर रही हैं, वेद मंत्रों का उच्चारण कर रही हैं, स्वाहा-स्वाहा की ध्वनि गंजायमान हो रही है, यज्ञ प्रार्थना और भजनों के सामूहिक मधुर गायन से मानव निर्माण के कार्य को गति मिल रही है, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्यसमाज का संकल्प घर-घर यज्ञ, हर-घर यज्ञ का सपना साकार हो रहा है।

अभी पिछले दिनों जनवरी मास में माडल टाउन की जय-जय कालोनियों में 14 जनवरी से लेकर 26 जनवरी तक तीन दर्जन घरों में प्रशिक्षित महिलाओं ने यज्ञ करने का कीर्तिमान स्थापित किया जो कि लगातार गतिशील है और आने वाले टाइम में हजारों घरों में यज्ञ की ज्योति प्रज्वलित की जायेगी।

आर्य समाज की सभी चल रही योजनाओं प्रकल्पों, वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन, सोशल मिडिया हैंडल्स का उपयोग करने हेतु
8750-200-300
मिस्ड कॉल करें
SMS पर प्राप्त होने वाला लिंक खोलें

आइए, सभा की इस कल्याणकारी योजना में सहभागी बनें, इन जय-जय कालोनियों में यज्ञ करना कराना पूरी तरह से परोपकार ही परोपकार है। इसमें घी, सामग्री, समिधा, यज्ञपात्र, दरी, माइक और यज्ञ के ब्रह्मा आदि विद्वान, भजनोपदेशक आदि की व्यवस्था में सहयोग अथवा यज्ञ के आयोजन हेतु सम्पर्क करें।

– बृहस्पति आर्य, संयोजक
9650183335

कोलकाता

आर्य समाज हावड़ा द्वारा गंगा सागर मेला कोलकाता में आर्य समाज का सेवा शिविर सम्पन्न

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी कोलकाता बंगाल में गंगा सागर मेला आयोजित किया गया। जिसमें आर्य समाज हावडा, द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं तथा आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार हेतु 11 से 15 जनवरी 2025 तक दोनों समय यज्ञ, भजन तथा प्रवचन वैदिक विद्वानों द्वारा किया गया। इसके अलावा वैदिक साहित्य का वितरण तथा विक्रय किया गया। हर वक्त चिकित्सक तथा दवाईयां की सेवा उपलब्ध रही। प्रतिदिन सुबह एवं शाम चाय-बिस्कुट, नाश्ते में हलुवा तथा पूड़ी-सब्जी, दिन में मसालेदार खिचड़ी तथा सायंकाल पूड़ी-सब्जी/ खिचड़ी का वितरण हुआ।

आगन्तुक महानुभावों की सुविधा के लिए ठहरने एवम् शौचालय की उत्तम व्यवस्था रही। शिविर की सफलता के लिए हम सभी दानदाताओं, कार्यकर्ताओं, आचार्यों तथा सहयोगी संस्थाओं का हृदय से धन्यवाद करते हैं।

– प्रमोद अग्रवाल, प्रधान
राजेश आर्य, मंत्री
आर्य समाज हावड़ा

भारत के परिवर्तन की नींव रखने वाले ✯ महर्षि दयानन्द के अमर वाक्य ✯

गृहस्थ कैसे सफल हों?

गृहस्थ में दोनों की परस्पर प्रीति को ही सफलता का कारण मानते हैं – दयानन्द

"अप्रीतिः- परस्पर प्रीति के बिना न गृहाश्रम का निश्चित सुख, न उत्तम सन्तान और न प्रतिष्ठा वा लक्ष्मी आदि श्रेष्ठ पदार्थों की प्राप्ति कभी होती है।"

–महर्षि दयानन्द के पत्र व्यवहार

– ये सुख का सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

15

पति पत्नी को दुःख कब होता है?

"आत्मवत् :- जैसे किसी की स्त्री दूसरे पुरुष से प्रसिद्ध वा अप्रसिद्ध प्रीति करे तो उसके पति को कितना बड़ा क्लेश होता है। इसी प्रकार पति के पर-स्त्री व वेश्या गमन से पत्नी को महादुःख होता है।"

– ऋषि दयानन्द पत्र विज्ञापन भाग-2

16

उपरोक्त वाक्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भारत के परिवर्तन क्रांति की नींव रखने वाले महर्षि के अमर वाक्य" से साभार नियमित स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन वाक्यों को पढ़कर आप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों, सिद्धान्तों और आर्यसमाज की मान्यताओं से परिचित हो सकते हैं तथा सोशल मीडिया पर प्रसारित करके परोपकार में सहभागी भी बन सकते हैं। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें अथवा दिया गया कोड स्कैन करें –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

साप्ताहिक स्वाध्याय

थियोसॉफी से सम्बन्ध

गतांक से आगे-

जो मूल संस्था का सभ्य है उसे शाखा का सभ्य बनने की क्या आवश्यकता है? परन्तु कर्नल अल्कॉट तथा मैडम ब्लैवेट्स्की ने आर्यसमाज के सभासदों को अपने सभासद् बनाना प्रारम्भ कर दिया। इस व्यवहार को महर्षि जी ने अनुचित समझा। ये तीन बातें मूल में थीं। वे थियोसॉफी के लीडर, जिन्हें अपने सिद्धान्त आर्यसमाज के ऐन अनुकूल दिखाई देते थे, शीघ्र ही संसार के कर्ता ईश्वर और आर्यसमाज से इन्कार कर बौद्धों में नाम लिखने लगे। अमेरिका में मैडम ब्लैवेट्स्की के अन्दर केवल किंग जॉन की आत्मा प्रवेश करती थी, परन्तु भारत में आते ही हिमालय निवासी महात्मा और उनके प्रतिनिधि महात्मा कूटहुमी से मैडम का परिचय हो गया, और हिमालय से सीधे सन्देश पहुंचने लगे।

सबसे बड़ा कारण, जिससे मतभेद पैदा हो गया, यह था कि थियोसॉफी के संस्थापक चमत्कारों को अपने धर्म का सिद्धान्त मानने और उद्घोषित करने लगे। चमत्कारों को वे योगसिद्धि नाम से पुकारते थे। परन्तु योग के बिना ही योगसिद्धि नाम से पुकारते थे, परन्तु योग के बिना ही योगसिद्धि का दावा करते थे। सिद्धियां भी विचित्र थीं। किसी की गुम हुई वस्तु का पता दे दिया, किसी के दिल की बात बूझने की अटकल लगा दी। ऐसे चमत्कार थे, जिन्हें दिखाकर थियोसॉफी लोगों के हृदयों में योग के प्रति श्रद्धा का संचार करना चाहती थी। थियोसॉफी के उस समय के चमत्कारों के दो दृष्टान्त दिये जाते हैं, उन पर दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाएगा कि आर्यसमाज के संस्थापक के विचार थियोसॉफी के विचारों से क्यों नहीं मिल सकते थे।

मैडम ब्लैवेट्स्की शिमला में थीं। प्रसिद्ध मि० ए०ओ० ह्यूम के घर पर कुछ को निमन्त्रण था। उनमें मैडम ब्लैवेट्स्की भी शामिल थीं। भोजन के पीछे यह बात उठी कि मैडम अपना कोई आध्यात्मिक चमत्कार दिखावें। मैडम तैयार हो गई। घरवालों से उन्होंने पूछा कि क्या आप लोगों की कोई वस्तु गुम हुई है? उत्तर से पता चला कि कुछ रोज हुए, मि० ह्यूम के घर से एक आभूषण गुम हुआ था। मैडम ने कुछ देर तक ध्यान करके बाग का वह स्थान बता दिया, जहां गुम हुई वस्तु गड़ी थी। वस्तु मिल गई, और चमत्कार की धूम दिग्दिगन्तर में फैल गई। कुछ दिन पीछे इंगलिश मैन, बॉम्बे गजट, टाइम्स ऑफ इण्डिया और सिविल मिलिटरी गजट में चिटिठयां प्रकाशित हुईं, जिनसे रहस्य का उद्घाटन हो गया। एक अंग्रेज नौजवान शिमला से बम्बई गया, और वहां मैडम से मिला। शिमला में वह मि० ह्यूम के यहां बहुत आया-जाया करता था। बम्बई के मि० होर्मसजी सीराबाई ने गवाही दी कि जैसा गहना चमत्कार से मिला है, ठीक वैसे ही गहने की मैडम ब्लैवेट्स्की ने उससे मरम्मत करवाई थी। रहस्य को लेकर ऐतिहासिक घटना बना देना कुछ कठिन नहीं है। वह गहना मि० ह्यूम के घर से उड़ाया गया। बम्बई में उसकी मरम्मत करवाकर मैडम अपने साथ शिमला ले गई और चमत्कार दिखाकर थियोसॉफी की सत्यता सिद्ध कर दी।

दूसरी घटना लाहौर में हुई। 1883 के अप्रैल मास में थियोसॉफी के महात्माओं का एक चेला लाहौर पहुंचा। मैडम ब्लैवेट्स्की के शिष्य ने बड़े जोर से उनका ढोल बजाया और यह घोषणा कर दी कि वह चेला चमत्कार दिखाएगा। वह अपनी उंगली आगे करेगा। पहले तो उंगली को कोई काट ही नहीं सकेगा, यदि काट भी सके तो वह झटपट जुड़ जाएगी। भरी सभा में चमत्कार की घोषणा कर दी गई। पहले तो किसी हिन्दू का हृदय ऐसे कठोर कार्य के लिए तैयार न हुआ, परन्तु जब बहुत देर हो गई, और लोगों के दयाभाव का अभिप्राय यह निकाला जाने लगा कि चेले की शक्ति से किसी का हाथ नहीं उठता, तब एक सिख ने हिम्मत करके उंगली काट दी। बेचारा चेला चक्कर में आ गया। उंगली का जुड़ना तो क्या था, बेचारा कई दिनों तक दु:ख भोगता और महात्माओं के नाम का जाप करता रहा।

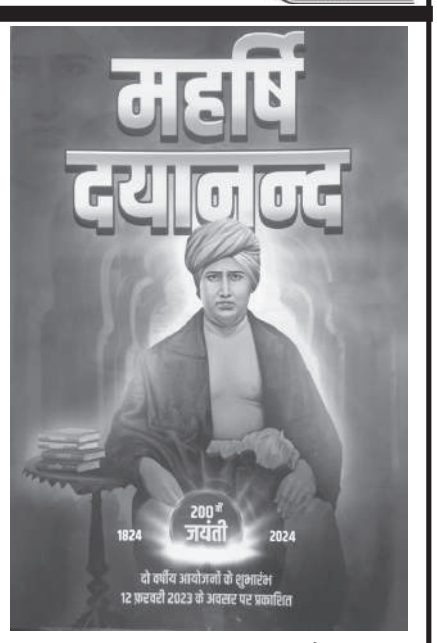

-क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Relation with Theosophy

In a letter dated May 22, 1878, Augustus Gustum, secretary of the Theosophy Society Recordick, writes-

To leaders of Arya Samaj,

You are respectfully informed that at the meeting of the Council of the Theosophical Society held at New York on May 22, 1878, under the chairmanship of the President, on the proposal of Vice-President A.U. Wilder and the approval of H.P. Blavatsky, Corresponding Secretary, it was unanimously resolved that the society accepts the proposal to merge with the Aryasamaj and also accepts that the name of this society be given as 'Theosophical Society of the Aryasamaj of India'.

It was decided that the Theosophical Society should adopt Swami Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj, as its guide and leader for its branches in Europe and America.

Thus the Theosophical Society established a relationship with the Arya Samaj, when the directors of the Society, who were residents of America, did not know where to get next day's food. There they were infamous and harassed. It is clear from the earlier letters that at that time the leaders of the society considered it their good fortune to consider Swamiji as their guru, and were ready to join the organization of Aryasamaj in every way. Finally, after sufficient correspondence, the theosophist couple reached Bombay in January 1879, and expressed their eagerness to pay obeisance at the feet of the one whom they regarded as their guru.

First of all this couple met Swamiji in Saharanpur. After this the couple visited with Swamij many places.Swami ji's disciples started hearing lectures by these Theosophists who called themselves Arya Samaj, and started showing respect to them. This love-relationship was established for about a year and the Theosophists continued to grow. This time was enough to establish a foothold in India and gather many disciples. English-educated Indians liked to listen to that couple. New colors started appearing about the continuation of the love affair for almost a year.

There were three main reasons for the quarrel. In India, the theosophist couple realized that the person whom they had considered guru, would remain a guru and could not become a disciple. The couple thought that they would be able to make Pandit Dayanand a means of their growth, but they soon realized that this Indian scholar was not so innocent that he could become a weapon. On the other hand, the couple saw that there a lot of ignorance and faith in India. If some person wants to come and become a teacher, he will not be completely disappointed, he will definitely get some disciples. In such a situation, the founders of Theosophy thought it best to separate their shop. Before coming they were Arya Samaji but, soon after coming they came to know that their principles match more with Buddhists than Arya Samajis.

The third reason was a result of the two reason. The Theosophy Society was a branch of the Arya Samaj. Those who were members of Theosophy, they could be considered as members of Aryasamaj only. In such a situation it was inconsistent to think that the members of Arya Samaj should be made members of Theosophy.There was no reason why the members of the original institution should become the members of the branch institution. These three things were in the origin.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

विज्ञापन

सुयोग्य आर्य वर चाहिए

हरियाणा, चरखी-दादरी, गांव भांडवा के प्रतिष्ठित आर्य परिवार की कन्या - सुमेधा आर्या, जन्मतिथि-12/12/1993, कद- 5'5'', बी.एस.सी., एम.एस.सी.(कैमिस्ट्री), बी.एड., सी.एस.आई.आर.नेट-जे.आर.एफ., सी.टी.ई.टी. उत्तीर्ण, गुरुग्राम स्थित- इपैम इंटरनेशनल कम्पनी में एच.आर. मैनेजर, पैकेज-18 लाख वार्षिक हेतु आर्य परिवार के सुयोग्य, समकक्ष योग्यता, सेवारत, शुद्ध शाकाहारी, मद्यपान रहित वर की आवश्यकता है। कन्या के माता-पिता सेवानिवृत्त संस्कृत अध्यापक, बड़े भाई का अपना व्यवसाय, छोटा भाई पी.एच.डी. अध्ययनरत।

वर्जित गौत्र- स्व-श्योराण, माता-गहलावत, दादी-दांगी, नानी-कादियान।

इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें - **9812685005/9812298932**

पृष्ठ 2 का शेष क्या पवित्रता और उद्देश्यों ....

किन्तु यह पद हांसिल करने में संतों का पूरा जीवन बीत जाता था। क्योंकि इसके लिए अनिवार्य था वेद, उपनिषद, दर्शन, गीता आदि का सम्पूर्ण ज्ञान। साथ ही इस पद के लिए यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का अनुकरण। साथ ही कई स्तरीय जांच होती। ज्ञान-वैराग्य की परीक्षा में खरा उतरने पर ही यह पदवी मिलती थी। नियम ये भी था कि इस पद को देने से पहले उसकी मंडली के साधु-संत उक्त महामंडलेश्वर के घर जाकर परिवार जनों व रिश्तेदारों, अड़ोस-पड़ोस, गाँव से संपर्क करके सच्चाई का पता करते थे कि उक्त महामंडलेश्वर पर कोई आपराधिक मुकदमा तो नहीं। इसके बाद तय होता कि अब वह घर-परिवार के संपर्क नहीं रखेगा। भोग-विलासिता युक्त जीवन नहीं जिएगा। अपने बचे जीवन का उपयोग सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार, देश के कोने-कोने में करना होगा। अपने ज्ञान का प्रकाश फैलाना होगा। भटके लोगों को मानवता की सही राह दिखाना होगा। धर्मान्तरित लोगों को पुनः सनातन में वापस लाने का काम करना होगा।

लेकिन अब ऐसा कुछ नहीं है। किसी को भी यह जिम्मेदारी और गरिमा का पद दिया जा सकता है। उसके लिए को नियम नहीं है। न सनातन धर्म का प्रचार करना, न ही कोई प्रवचन देना। अब तो लगता है कि जैसे कुम्भ में गोता लगाने के लिए महामंडलेश्वर का पद रह गया है। थोड़े समय पहले दहेज प्रताड़ना और ठगी की आरोपी राधे मां को जूना अखाड़े ने महामंडलेश्वर नियुक्त किया था। दूसरा मामला सचिन दत्ता का आया था, जिनके बारे में बताया गया कि वह गाजियाबाद में कथित तौर पर बीयर बार चलाने और ज़मीन की ख़रीद-फरोख्त का कारोबार करते हैं। सचिन दत्ता को महामंडलेश्वर बनाया गया, लेकिन जब विवाद मचा, तो बाद में इस फ़ैसले को कुछ दिन के लिए रद्द कर दिया गया था।

कभी ड्रग्स तो कभी अंडरवर्ल्ड से जुड़े रहने से विवाद में आई अभिनेत्री ममता कुलकर्णी को अब यह पद दिया गया है। ममता कुलकर्णी का अब 'श्रीश्यमा ममतानंद गिरि' नया नाम होगा।

ऐसे कृत्यों और अनेको प्रश्नों के बीच जैसलमेर जिले के पोखरण से बीजेपी विधायक और तारातरा मठ के महंत प्रतापपुरी महाराज ने महाकुंभ की गरिमा और उद्देश्य को लेकर सोशल मीडिया के रुख पर गहरी नाराजगी जताई है। उन्होंने बाड़मेर में एक बैठक के दौरान कहा कि डेढ़ सौ साल बाद महाकुंभ का योग बना है, जो संतों और आध्यात्मिक चर्चा का विषय होना चाहिए था। लेकिन सोशल मीडिया पर महाकुंभ की जगह कुछ अन्य चेहरों और मुद्दों को प्रमुखता दी जा रही है। पहले कुम्भ को एक अवसर कहा जाता था, लेकिन समय बीतने के साथ इसने एक महोत्सव का आकार ले लिया है। यह एक ऐसा धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व है, जो पूरी दुनिया पर एक छाप छोड़ देता था, इस तरह का पर्व जो एक धर्म और संस्कृति के बारे में सोचता था।

किन्तु इस बार कुम्भ देखकर मन में सवाल उफन रहे हैं कि क्या पवित्रता और उद्देश्य से भटक रहा है कुम्भ मेला ? अगर कुम्भ को सार्थक ही करना था तो इसमें वेटिकन से लेकर तमाम मत-पंथ के विद्वानों को आमंत्रित करते, उनसे शास्त्रार्थ करते। मीडिया सोशल मीडिया का युग है, सनातन धर्म और ज्ञान की रोशनी दुनिया तक पहुँचती। ईश्वर, ज्ञान, मोक्ष, समाधि जैसे प्रश्न उठते तो दुनिया को उनके जवाब वेदों, उपनिषदों, दर्शनों के अतिरिक्त कहीं नहीं मिलते। दुनिया के जिज्ञासु लोग आपसे तब सार्थक होता दुनिया का सबसे बड़ा मेला। पौराणिक कहते हैं इस स्थान पर कभी अमृत छलका था, किन्तु कुम्भ में बहुत कुछ देखकर लग रहा है कि जैसे इस बार कई तरह से विष भी छलक रहा है।

- सम्पादक

विश्वभर में आर्यसमाज की लहराती पताकाओं को दर्शाता
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2025 का कैलेण्डर प्रकाशित
आर्यसमाजें अधिकाधिक सख्या में अपने नाम से छपवाकर प्रचार करें

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 प्रतियों से अधिक के आर्डर पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com

ओ३म्
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में

आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन

रविवार, 9 फरवरी 2025, प्रातः 11 बजे से
स्थान : आर्य समाज देव नगर, करोलबाग, नई दिल्ली 05

अनिवार्य ऑनलाइन पंजीकरण

पंजीकरण करवाने की अंतिम तिथि 3 फरवरी 2025
तभी पुस्तिका में विवरण प्रकाशित होगा

bit.ly/parichay2024
अथवा
QR कोड स्कैन करें

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें : 9311721172

संयोजक

आर्य सतीश चड्डा	विभा आर्या	वीना आर्या	रश्मि वर्मा
राष्ट्रीय संयोजक	संयोजक	सहसंयोजक	सहसंयोजक

निवेदक

धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	विद्यामित्र ठुकराल
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष

नोट : विधवा-विधुर, तलाकशुदा, विकलांग तथा 35 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के युवक युवतियों के लिए विशेष सुविधा

शोक समाचार

श्री जोगेन्द्र खट्टर जी को मातृशोक

सार्वदेशिक सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के उप प्रधान एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य श्री जोगेन्द्र खट्टर जी की पूज्या माता श्रीमती ईश्वर देवी खट्टर जी (धर्मपत्नी स्व. श्री रामचन्द्र खट्टर) का 28 जनवरी, 2025 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 29 जनवरी को पंजाबी बाग शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, दयानन्द सेवाश्रम संघ एवं निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ-श्रद्धांजलि सभा 31/1/25 को कम्युनिटी सैन्टर सैनिक विहार में सम्पन्न हुई।

श्री विजय कपूर जी को पत्नी शोक

आर्यसमाज आर्य नगर पहाड़गंज एवं श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के प्रधान श्री विजय कपूर जी की धर्मपत्नी श्रीमती पूनम कपूर जी का दिनांक 16 जनवरी, 2025 को लगभग 73 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 19 जनवरी को आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

भजनोपदेशक पं. सत्यपाल सरल नहीं रहे

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. सत्यपाल सरल जी का दिनांक 27 जनवरी, 2025 की रात्रि में आकस्मिक निधन हो गया। वे काफी समय के अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ देहरादून के भण्डारी बाग स्थित लक्खीबाग शमशान घाट में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर देहरादून एवं निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

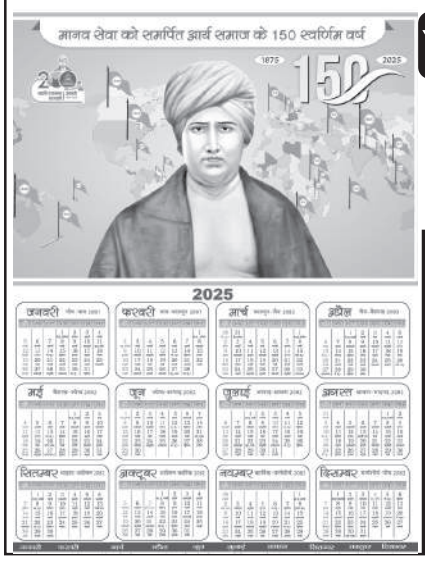

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 27 जनवरी, 2025 से रविवार 02 फरवरी, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 30-31/1-1/02/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29, जनवरी, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

प्रथम पुरस्कार : 1 लाख रुपये एवं विशेष उपहार।
द्वितीय पुरस्कार : 51 हजार एवं विशेष उपहार (2)
तृतीय पुरस्कार : 31 हजार एवं विशेष उपहार (3)
चतुर्थ पुरस्कार : 5100/- एवं विशेष उपहार (25)
पांचवा पुरस्कार : नकद 2100/- रुपये (100)
छठा पुरस्कार : नकद 1000/- रुपये (250)
सातवां पुरस्कार : नकद 500/- रुपये (250)

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

प्रतिष्ठा में,

नियम व शर्तें -

1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।
2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)
3. प्रश्नपत्र को भरकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001'** के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।
4. दिनांक **1 सितम्बर 2025** से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।
5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।
6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।
7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **'साप्ताहिक आर्यसन्देश'** में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा द्वारा संचालित वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।
8. सभी पुरस्कार **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2025'** में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।
9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना / भेजना अनिवार्य होगा। - ***संयोजक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह